अध्याय 7

बलिदान से संबंधित अतिरिक्त निर्देश (जारी है)

लैव्यव्यवस्था 7, मिलापवाले तम्बू में चढ़ाए जाने वाले बलिदानों के विवरण के विषय के साथ, जो 6:8 में आरंभ हुआ था, आगे बढ़ते हुए याजकों के अधिकारों और दायित्वों पर 6:8-7:36 में बल दिया गया है। होमबलियों (6:8-13), अन्नबलियों (6:14-23),और पाप बलियों (6:24-30), से संबंधित जानकारी के बाद अध्याय 7 दोषबलियों (7:1-7) और मेलबलियों (7:11-36) के बारे में और आगे के निर्देश देता है। मुख्य बल उस भोजन पर है जो याजकों को उन चढ़ाए जाने वाले बलिदानों से मिलना था। यहाँ विवरण मिलता है कि याजकों, तथा परमेश्वर के अन्य लोगों के द्वारा, क्या खाया जाना था और क्या नहीं। अध्याय 7 की अड़तीस में से लगभग बीस आयतें किसी न किसी प्रकार से इस विषय से संबंधित हैं। याजकों एवँ अन्य इस्राएलियों द्वारा खाए जाने वाले भोजन के संबंध में परमेश्वर की चिंता सारे पुराने नियम में मिलती है, परन्तु नया नियम यह स्पष्ट कर देता है कि मसीही पुराने नियम के भोजन संबंधी नियमों से अब बंधे हुए नहीं हैं। परमेश्वर ने यह प्रेरितों के काम 10:9-16 में पतरस को दिए दर्शन द्वारा प्रगट किया। पौलुस ने ऐसे लोगों के विरुद्ध सचेत किया "जो ... भोजन की कुछ वस्तुओं से परे रहने की आज्ञा देंगे; जिन्हें परमेश्वर ने इसलिये सृजा कि विश्वासी, और सत्य के पहिचानने वाले उन्हें धन्यवाद के साथ खाएं" (1 तिमु. 4:3)।

दोषबलियाँ: याजकों के दायित्व (7:1-7)

[1]"फिर दोषबलि की व्यवस्था यह है। वह परमपवित्र है; [2]जिस स्थान पर होमबलिपशु का वध करते हैं उसी स्थान पर दोषबलिपशु भी बलि करें, और उसके लहू को याजक वेदी पर चारों ओर छिड़के। [3]और वह उसमें की सब चरबी को चढ़ाए, अर्थात् उसकी मोटी पूंछ को, और जिस चरबी से अंतड़ियाँ ढपी रहती हैं वह भी, [4]और दोनों गुर्दे और जो चरबी उनके ऊपर और कमर के पास रहती है, और गुर्दों समेत कलेजे के ऊपर की झिल्ली, इन सभों को वह अलग करे; [5]और याजक इन्हें वेदी पर यहोवा के लिये हवन करे, तब वह दोषबलि होगा। [6]याजकों में के सब पुरुष उसमें से खा सकते हैं; वह किसी पवित्रस्थान में खाया जाए; क्योंकि

वह परमपवित्र है। 7जैसा पापबलि है वैसा ही दोषबलि भी है, उन दोनों की एक ही व्यवस्था है; जो याजक उन बलियों को चढ़ा के प्रायश्चित्त करे वही उन वस्तुओं को ले।"

अधयाय का आरंभ परमेश्वर से दोषबलियों के संबंध में, जिनकी चर्चा 5:14-6:7 में की गई है, मिले अतिरिक्त निर्देशों के साथ होता है। इससे पिछले दोनों अध्यायों में, याजक ने दोषबलि को कैसे चढ़ाना है इस विषय में बहुत कम कहा है। इसकी तुलना में,यहाँ पर इस बलिदान के प्रबंधन के विषय विस्तृत निर्देश दिए गए हैं। बलिदान संबंधी अनेक बातें ध्यान देने योग्य हैं।

आयत 1. सर्वप्रथम, वह **परमपवित्र** था। यही अभिव्यक्ति अन्य बलिदानों पर भी लागू की गई थी। क्योंकि वह "परमपवित्र" था, इसलिए उसे "पवित्रस्थान" में खाया जाना था (7:6)।

आयतें 2-5. दूसरा, उसे उसी **स्थान** पर वध किया जाना था **जिस स्थान पर होमबलिपशु का वध करते हैं** (7:2)। यह अन्य बलिदानों के समान इस प्रकार था कि इसके भी चर्बी वाले भाग **वेदी पर यहोवा के लिये हवन करे** जाने थे (7:3-5)।

तीसरा, पापबलि के साथ जो होता था उसके प्रतिरूप, इस बलि पशु का **लहू** वेदी के सींगों पर नहीं लगाया जाता था। वरन, **दोषबलि** का लहू वे**दी पर चारों ओर** छिड़का जाना था (7:2)।

आयत 6. अन्त में, पशु का वह भाग जो वेदी पर जलाया न जाए उसे **याजकों** को खा लेना था। वास्तव में परिच्छेद एक ऐसा विवरण देता है जो अभी तक परमेश्वर के निर्देशों में नहीं दिया गया था: बलि पशु का याजकीय भाग खाए जाने के लिए उपलब्ध था - न केवल याजक द्वारा वरन याजकों में **सब पुरुषों** द्वारा भी।[1] इस विशेषाधिकार को केवल **पवित्रस्थान** में ही प्रयोग किया जा सकता था क्योंकि दोषबलि **परमपवित्र** थी (देखें 7:1)। यहाँ जिस "पवित्रस्थान" के विषय में कहा गया है, निःसंदेह वह मिलापवाला तम्बू है; याजक दोषबलि का अपना भाग मिलापवाले तम्बू के आँगन में खाते थे।

आयत 7. फिर परमेश्वर ने यह अतिरिक्त जानकारी उपलब्ध करवाई: **जैसा पापबलि है वैसा ही दोषबलि भी है, उन दोनों की एक ही व्यवस्था है।** ये शब्द संकेत देते हैं कि, जैसा पहले उल्लेख किया गया, दोनों बलिदानों में निकट संबंध है। यहोवा यह कह रहा था कि, सामान्यतः, जो नियम पापबलि के लिए हैं, वही दोषबलि पर भी लागू होते हैं। इसलिए, यदि किसी के पास दोषबलि के विषय कोई प्रश्न है, तो वह वहाँ देख सकता था जहाँ यहोवा ने पापबलि का वर्णन दिया था। पापबलि से संबंधित विवरण संभवतः दोषबलि के लिए भी सही होता।

याजकों के दायित्व संबंधी दो परिशिष्ट (7:8-10)

बिना किसी चेतावनी के, ध्यान का केन्द्र बिंदु फिर दोषबलि से होमबलि और फिर अन्नबलि पर चला जाता है। क्यों? संभवतः इसलिए, क्योंकि दोषबालि से

संबंधित अंतिम वाक्य उस बालि में याजक के भाग के बारे बताते हैं। इसलिए, यहोवा के लिए यह यथोचित था, कि इस बिंदु पर आकर दोषबलि संबंधी अपने निर्देशों में दो परिशिष्ट सम्मिलित कर दे। दोनों ही अन्य बलिदानों में याजकों के भाग से संबंधित हैं।

परिशिष्ट 1: याजकों का भाग होमबलियों का (7:8)

8"और जो याजक किसी के लिये होमबलि को चढ़ाए उस होमबलिपशु की खाल को वही याजक ले ले।"

आयत 8. होमबलि, अन्य बलियों के प्रतिरूप, पूर्णतः वेदी पर भस्म की जाती थी। इसलिए यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि **याजक** को कुछ नहीं मिलता था, जब कोई आराधक किसी पशु को होमबलि चढ़ाने के लिए लाता था। किंतु, याजक को उस बलि से कुछ तो मिलता था: बलि पशु की **खाल**। पशु को चढ़ाए जाने से पहले उसकी खाल उतार ली जाती थी।

परिशिष्ट 2: याजक का भाग अन्नबलि में से (7:9, 10)

9"और तंदूर में, या कढ़ाही में, या तवे पर पके हुए सब अन्नबलि उसी याजक की होंगी जो उन्हें चढ़ाता है। 10और सब अन्नबलि, जो चाहे तेल से सने हुए हों चाहे रूखे हों, वे हारून के सब पुत्रों को एक समान मिले।"

आयतें 9, 10. अन्नबलियों से संबंधित पहले के निर्देशों में प्रकट किया गया था कि प्रत्येक बलिदान में से केवल मुठ्ठी भर "स्मरण दिलाने वाले भाग" के लिए जलाई जानी थी,और शेष याजकों के पास जानी थी (2:2, 3, 9, 10, 16)। यह अध्यादेश इसी नियम की पुनःआवृति करता है, और यह भी निर्धारित करता है कि **अन्नबलि** का याजक वाला भाग सब याजकों के साथ साझा किया जाए (**सब को एक समान**)। केवल बलि चढ़ाने के समय कार्य करने वाले व्यक्ति द्वारा ही न खाया जाए।

ये नियम संकेत देते हैं कि बलिदानों का उद्देश्य चढ़ाने वाले व्यक्ति(यों) द्वारा परमेश्वर की कृपादृष्टि प्राप्त करना मात्र नहीं था। बलिदानों की समस्त प्रक्रिया का एक उद्देश्य याजकीय घराने का भरण-पोषण भी था। जब इस्राएल कनान में आकर बसा, तब लेवियों (याजकों सहित) को गोत्रों के आधार पर बांटे गए भू-भाग में से कोई भाग नहीं दिया गया था, यद्यपि उन्हें अड़तालीस नगर और उनके आस-पास की चराई की भूमि दी गई थी (यहोशू 21:1-42)। उनके जीवन यापन के लिए लोगों द्वारा लाए गए दशमांश और बलिदान थे। दूसरे शब्दों में, वे शेष इस्राएलियों पर निर्भर थे। यदि परमेश्वर के लोग अपने चढ़ावे नहीं लाते, या अन्य किसी कारण से यदि याजकों को उन चढ़ावों में से उनका भाग नहीं मिलता, तो याजक परमेश्वर और मनुष्यों के मध्य बिचवई होने की अपनी भूमिका को नहीं निभा पाते। परिणामस्वरूप इस्राएली यहोवा से कट जाते। इसलिए यह महतवपूर्ण था कि

याजक परमेश्वर के लोगों के द्वारा लाए गए बलिदानों में से अपने भाग को प्राप्त करें।[2]

मेलबालियाँ: याजकों के दायित्व (7:11-36)

मिलापवाले तम्बू में चढ़ाए जाने वाले बलिदानों के संबंध में दिए गए स्पष्टिकरणों की दूसरी श्रंखला में (जिसका आरंभ 6:8 में हुआ), चर्चा के पाँच में से मेलबलि अंतिम है। (पहली श्रंखला में वह तीसरी थी।)

परिचय (7:11)

[11]"मेलबलि की, जिसे कोई यहोवा के लिये चढ़ाए व्यवस्था यह है।"

आयत 11. इस परिच्छेद में **मेलबलि की ... व्यवस्था** मुख्यतः उससे संबंधित है जो याजकों को प्राप्त होता था और वे (तथा अन्य) क्या खा सकते थे, और क्या नहीं खा सकते थे।

तीन प्रकार की मेलबलियाँ (7:12-18)

[12]"यदि वह उसे धन्यवाद के लिये चढ़ाए, तो धन्यवादबलि के साथ तेल से सने हुए अख़मीरी फुलके, और तेल से चुपड़ी हुई अख़मीरी रोटियाँ, और तेल से सने हुए मैदे के फुलके तेल से तर चढ़ाए। [13]और वह अपने धन्यवादवाले मेलबलि के साथ ख़मीरी रोटियाँ भी चढ़ाए। [14]और ऐसे एक एक चढ़ावे में से वह एक एक रोटी यहोवा को उठाने की भेंट करके चढ़ाए; वह मेलबलि के लहू के छिड़कनेवाले याजक की होगी। [15]और उस धन्यवादवाले मेलबलि का मांस बलिदान चढ़ाने के दिन ही खाया जाए; उसमें से कुछ भी भोर तक शेष न रह जाए। [16]पर यदि उसके बलिदान का चढ़ावा मन्नत का या स्वेच्छा का हो, तो उस बलिदान को जिस दिन वह चढ़ाया जाए उसी दिन वह खाया जाए, और उस में से जो शेष रह जाए वह दूसरे दिन भी खाया जाए। [17]परन्तु जो कुछ बलिदान के मांस में से तीसरे दिन तक रह जाए वह आग में जला दिया जाए। [18]और उसके मेलबलि के मांस में से यदि कुछ भी तीसरे दिन खाया जाए, तो वह ग्रहण न किया जाएगा, और न उसके हित में गिना जाएगा; वह घृणित कर्म समझा जाएगा, और जो कोई उसमें से खाए उसका अधर्म उसी के सिर पर पड़ेगा।"

जब मेलबलियों से संबंधित निर्देश आरंभ होते हैं, तो पहली बार पाठक इस बात से अवगत होता है कि इस प्रकार के तीन चढ़ावे थे: धन्यवादबलियाँ, मन्नत बलियाँ, स्वेच्छा बलियाँ। यूजीन ई. कारपेंटर ने इन का वर्णन इस प्रकार से किया: (1) धन्यवादबलि "छुटकारे या प्राप्त आशीष के लिए" कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए थी। वह किसी "पूर्व प्रतिज्ञा या मन्नत" के साथ संबंधित नहीं थी। (2) मन्नत की बलि तब चढ़ाई जाती थी जब "किसी निवेदन के लिए कोई मन्नत माँगने के पश्चात

कोई आशीष या छुटकारा मिल जाता था।" (3) स्वेच्छा बलि आनंदपूर्वक चढ़ाई जाती थी "परमेश्वर के प्रति धन्यवाद व्यक्त करने के लिए। उसके साथ किसी विशेष छुटकारे या आशीष का कोई उल्लेख नहीं था।"[3]

आयतें 12-15. मेलबलियों से संबंधित निर्देश सबसे पहले **धन्यवादबलि** के बारे में हैं। इन निर्देशों के दिए जाने का उद्देश्य इन बलियों को चढ़ाने की विधि के विषय अतिरिक्त जानकारी देना था। (1) चढ़ाए गए पशु के साथ अन्नबलि भी चढ़ानी थी, जिसे कई में से किसी एक स्वरूप में प्रस्तुत किया जा सकता था। आराधक **तेल से सने हुए अख़मीरी फुलके, और तेल से चुपड़ी हुई अख़मीरी रोटियाँ, और तेल से सने हुए मैदे के फुलके तेल से तर चढ़ाए** या **ख़मीरी रोटियाँ** चढ़ाए (7:12, 13)। (2) आराधक जो लाता था उस चढ़ावे में से वह **एक एक रोटी**[4] "यहोवा को उठाने की भेंट" (KJV)[5] करके चढ़ाए। इसे **याजकों को** दिया जाना था (7:14)। (3) बलि किए हुए पशु का वह भाग जो **धन्यवादबलि** के स्वरूप में प्रस्तुत किया जाता था उस में से चढ़ाने वाले का भाग उसी **दिन**, जिस दिन पशु बलि किया गया, **खाया जाना** था (7:15)।

क्यों? एक संभावना है कि यह आवश्यक था जिससे कि "उदार और अतिथि-सत्कार की भावना प्रोत्साहित हो, मित्रों और पड़ोसियों को आमंत्रित करके, विशेषकर जो निर्धन और आवश्यकता में हों, उनके साथ इस आनंदपूर्ण अवसर को साझा किया जाए (व्यवस्थाविवरण12:12)।"[6]

आयतें 16-18. मन्नत बलियों और **स्वेच्छा** बलियों के लिए उन्हीं में से अधिकांश नियम लागू होते थे। एक अपवाद था कि बलि में से सामान्य जन के भाग को उसी **दिन खाया जाना** था, परन्तु प्रयोजन दिया गया था कि यदि दूसरे दिन भी कुछ मांस बच गया होता। यदि ऐसा होता, तो वह **दूसरे दिन भी** खाया जा सकता था (7:16)। किन्तु यदि दूसरे दिन के बाद भी कुछ बच जाए तो उसे **जलाया जाना** था न कि **तीसरे दिन** खाया जाना था (7:17)। वास्तव में बचे हुए मांस में से कुछ खाना फिर परमेश्वर के लिए घृणित होता और उसे पाप समझा जाता (7:18)!

याजकों के लिए निषेध आज्ञाएँ (7:19-27)

अशुद्धता से संबंधित निषेध (7:19-21)

[19]"फिर जो मांस किसी अशुद्ध वस्तु से छू जाए वह न खाया जाए; वह आग में जला दिया जाए। फिर मेलबलि का मांस जितने शुद्ध हों वे ही खाएँ, [20]परन्तु जो अशुद्ध होकर यहोवा के मेलबलि के मांस में से कुछ खाए वह अपने लोगों में से नाश किया जाए। [21]और यदि कोई किसी अशुद्ध वस्तु को छूकर यहोवा के मेलबलिपशु के मांस में से खाए, वह भी अपने लोगों में से नाश किया जाए, चाहे वह मनुष्य की कोई अशुद्ध वस्तु या अशुद्ध पशु या कोई भी अशुद्ध और घृणित वस्तु हो।"

मेल बलि के लिए बलि किए गए मांस को खाने में मंद होने के नकारात्मक परिणामों के बारे में बताने के पश्चात, सन्देश अन्य निषेधों की ओर मुड़ता है। सबसे पहले यहोवा को मांस खाने से संबंधित अशुद्धता के विषय कुछ कहना था।

आयत 19. मेलबलियों की अशुद्धता से संबंधित होने की चर्चा सामान्य सत्य की दो बातों के साथ आरंभ होती है। (1) **मांस**, या भोजन, जो किसी **अशुद्ध वस्तु** से छू जाए **वह न खाया जाए**। क्यों? क्योंकि किसी अशुद्ध वस्तु से छू जाने से वह अशुद्ध हो जाता था (और उसे खाने वाले को भी अशुद्ध कर सकता था)। इसलिए ऐसे मांस को **आग में जला दिया** जाना था। (2) अन्य मांस उनके द्वारा खाया जा सकता था जो **शुद्ध** हों - अर्थात, ऐसा कोई भी जो किसी अशुद्ध वस्तु द्वारा दूषित नहीं हुआ हो।

आयत 20. ये नियम मेलबलि चढ़ाए गए मांस के खाए जाने पर लागू होते थे। पहले, सामान्य नियम कहता था: कोई भी जो अशुद्ध हो वह **यहोवा के मेलबलि के मांस में से** नहीं खा सकता था। यदि मेलबलि का मांस उपलब्ध था, तो कोई भी अशुद्ध व्यक्ति उसे नहीं खा सकता था। यदि खा ले तो **वह अपने लोगों में से नाश किया जाए!**

आयत 21. यह तथ्य एक दूसरे नियम पर ले गया: कोई भी किसी अशुद्ध मानी जाने वाली वस्तु को छू कर - वह अशुद्ध वस्तु चाहे **मनुष्य**, **पशु**, या कोई **घृणित वस्तु** हो[7] - जिस कारण वह अशुद्ध हो गया है, उसके लिए **मेलबलियों** का मांस खाना वर्जित था। यदि वह अपनी अशुद्ध दशा में इस बलि का मांस खाता है, तो **वह भी अपने लोगों में से नाश किया जाए!**

चर्बी और लहू से संबंधित निषेध (7:22-27)

[22]फिर यहोवा ने मूसा से कहा, [23]इस्राएलियों से इस प्रकार कह : तुम लोग न तो बैल की कुछ चरबी खाना और न भेड़ या बकरी की। [24]और जो पशु स्वयं मर जाए, और जो दूसरे पशु से फाड़ा जाए, उसकी चरबी अन्य काम में लाना, परन्तु उसे किसी प्रकार से खाना नहीं। [25]जो कोई ऐसे पशु की चरबी खाएगा जिसमें से लोग कुछ यहोवा के लिये हवन करके चढ़ाया करते हैं, वह खानेवाला अपने लोगों में से नाश किया जाएगा। [26]और तुम अपने घर में किसी भाँति का लहू, चाहे पक्षी का चाहे पशु का हो, न खाना। [27]हर एक प्राणी जो किसी भाँति का लहू खाएगा वह अपने लोगों में से नाश किया जाएगा।

अन्य निषेध 7:22-27 में जोड़े गए हैं। ये मेलबलियों पर लागू होते हैं, परन्तु इस्राएलियों के दैनिक भोजन से भी संबंधित हैं।

आयतें 22-27. एक बार फिर **यहोवा ने मूसा से कहा** (7:22), और उसने मांस खाने से संबंधित दो बातों को वर्जित किया। पहला, परमेश्वर के लोगों को पशुओं की **चरबी** को नहीं खाना था। यह नियम उनके द्वारा वध किए गए, स्वयं मरे हुए, और जो दूसरे **पशु** द्वारा फाड़े गए, ऐसे किसी भी पशु पर लागू थे (7:23, 24)।

जब यह सामान्य नियम बलि चढ़ाए हुए पशु पर लागू किया जाता (प्रत्यक्षतः अध्याय 3 में चढ़ाए गए मेलबलि पशुओं पर), तो परिणाम गंभीर होते: जो भी बलि चढ़ाए हुए **पशु की चरबी** खाता **वह खानेवाला अपने लोगों में से नाश किया जाए** (7:25)!

दूसरा, परमेश्वर ने लहू का खाया जाना वर्जित किया, पूर्व में, नूह के दिनों में (उत्पत्ति 9:4), कहे गए नियम की पुनःआवृति की गई। यह वर्जित किया जाना किसी पवित्र-स्थान तक ही सीमित नहीं था। वरन, इसकी सर्वव्यापकता वाक्याँश **तुम अपने घर में**, द्वारा व्यक्त होती है (7:26)। यदि कोई यहोवा को चढ़ाए गए पशु की चरबी या लहू को किसी भी अवसर पर खाता, तो **वह अपने लोगों में से नाश किया जाए** (7:27)!

अभिव्यक्ति "वह अपने लोगों में से नाश किया जाए" का अर्थ भिन्न प्रकार से लगाया गया है। कुछ व्याख्याकर्ता विश्वास करते हैं कि यह धमकी इस्राएलियों द्वारा व्यक्ति को बहिष्कृत किए जाने के विषय में है। अन्य इसे मार दिए जाने (मृत्यु दण्ड) के विषय में देखते हैं। कुछ अन्य सोचते हैं कि परमेश्वर इस दण्ड को असामयिक मृत्यु देने के द्वारा कार्यकारी करता था। एक अंतिम विचार है कि "नाश किया जाने" का अभिप्राय है कि परमेश्वर उसकी वंशावली को मिटा देगा। संदर्भ के अनुसार प्रथम विचार सबसे सटीक बैठता है।

याजकों के लिए सकारात्मक प्रयोजन (7:28-36)

नकारात्मक अध्यादेशों से, यहोवा याजकों के लिए कुछ सकारात्मक प्रयोजनों की ओर मुड़ा।

मेलबलियों में से याजकों का भाग (7:28-34)

[28]फिर यहोवा ने मूसा से कहा, [29]"इस्राएलियों से इस प्रकार कह: जो यहोवा के लिये मेलबलि चढ़ाए वह उसी मेलबलि में से यहोवा के पास भेंट ले आए; [30]वह अपने ही हाथों से यहोवा के हव्य को, अर्थात् छाती समेत चरबी को ले आए कि छाती हिलाने की भेंट करके यहोवा के सामने हिलाई जाए। [31]और याजक चरबी को तो वेदी पर जलाए, परन्तु छाती हारून और उसके पुत्रों की होगी। [32]फिर तुम अपने मेलबलियों में से दाहिनी जाँघ को भी उठाने की भेंट करके याजक को देना; [33]हारून के पुत्रों में से जो मेलबलि के लहू और चरबी को चढ़ाए दाहिनी जाँघ उसी का भाग होगा। [34]क्योंकि इस्राएलियों के मेलबलियों में से हिलाने की भेंट की छाती और उठाने की भेंट की जाँघ को लेकर मैं ने याजक हारून और उसके पुत्रों को दिया है कि यह सर्वदा इस्राएलियों की ओर से उनका हक़ बना रहे।"

व्यवस्था ने पहले ही यह कह दिया था कि यहोवा के लिए लाई गई मेलबलि में से लाने वाला कुछ भाग खाए (7:15-18)। यहाँ यह स्पष्ट किया गया है कि मेलबलि का कुछ भाग (जैसे कि पापबलि का कुछ भाग और दोषबलि का कुछ

भाग) उन याजकों का था जो बलि पशु को वेदी पर चढ़ाते थे।

आयतें 28-34. जिस क्रियाविधि का पालन किया जाना था वह यह थी कि चढ़ाने वाला **छाती समेत चरबी को ले आए**। फिर छाती **हिलाने की भेंट[8] करके यहोवा के सामने हिलाई जाए** (7:30)। प्रत्यक्षतः, आराधक "छाती" को याजक को दे देता था, जो अनुष्ठान के अनुसार उसे यहोवा के सम्मुख "हिलाता" या "ऊँचा उठाता" था यह दिखाने के लिए कि वह यहोवा को समर्पित की गई है क्योंकि वह याजकों को, जो परमेश्वर के प्रतिनिधि हैं[9], दी गई है।

फिर **याजक चरबी को वेदी पर जलाते** किन्तु **छाती** को अपने प्रयोग के लिए अलग रख लेते (7:31)। इसके अतिरिक्त, **दाहिनी जांघ को याजकों को** दिया जाना था (7:32) यह **इस्राएलियों की ओर से उनका हक़ बना रहे** (7:34)। इस प्रकार से मेलबलि के लिए लाए गए प्रत्येक पशु की "छाती" और "दाहिनी जांघ" याजकों को दी जाती थी। यह नियम इस बात पर बल देने के साथ अन्त होता है कि छाती और दाहिनी जांघ याजकों के लिए **सर्वदा** रहेंगे (7:34)।

मेलबलियों में याजकों का भाग: संक्षिप्त सार (7:35, 36)

[35]"जिस दिन हारून और उसके पुत्र यहोवा के समीप याजक पद के लिये लाए गए उसी दिन यहोवा के हव्यों में से उनका यही अभिषिक्त भाग ठहराया गया; [36]अर्थात् जिस दिन यहोवा ने उनका अभिषेक किया उसी दिन उसने आज्ञा दी कि उनको इस्राएलियों की ओर से ये भाग नित्य मिला करें; उनकी पीढ़ी पीढ़ी के लिये उनका यही हक़ ठहराया गया।"

यहोवा ने मेलबलियों से संबंधित अपने नियमों को, अपने द्वारा अभी दिए गए नियमों के बलपूर्वक सुदृढ़ीकरण के द्वारा, पूर्ण किया।

आयतें 35, 36. यहोवा ने दो बार कहा, जिसका उल्लेख 7:35 में इस्राएलियों द्वारा **यहोवा के समीप** लाए गए **हव्यों में से अभिषिक्त** (यथार्थ में, "अभियंजित") भाग उसने याजकों (**हारून** और उसके **पुत्रों**) को दे दिए हैं। इन भागों को याजकों के लिए पृथक किया जाना था, **जिस दिन यहोवा ने उनका अभिषेक किया उसी दिन** से। अर्थात "अभिषिक्त" या अभियंजित बलियों को "अभिषिक्त," या समर्पित याजकों को दिया जाना था। इससे आगे, लोगों द्वारा इस प्रकार से याजकों का भरन-पोषण करने का नियम **उनकी पीढ़ी पीढ़ी के लिये उनका यही हक़ ठहराया गया**। ये कथन स्पष्ट करते हैं कि यहोवा याजकों के भरन-पोषण पर बहुत महत्व देता था।

शब्द "पीढ़ी पीढ़ी के लिये," 7:36 में, का अर्थ "अनन्त" नहीं है; वरन, इसका अर्थ है "शेष युग तक" - अर्थात जब तक मूसा की व्यवस्था का युग जारी रहेगा - या "[इस्राएल की] सभी पीढ़ियों" तक, जब तक इस्राएल परमेश्वर के विशेष लोग रहेंगे और मूसा की व्यवस्था लागू रहेगी।

सारांश (7:37, 38)

[37]होमबलि, अन्नबलि, पापबलि, दोषबलि, याजकों के संस्कार बलि, और मेलबलि की व्यवस्था यही है; [38]जब यहोवा ने सीनै पर्वत के पास के जंगल में मूसा को आज्ञा दी कि इस्राएली मेरे लिये क्या-क्या चढ़ावा चढ़ाएँ, तब उसने उनको यही व्यवस्था दी थी।

अध्याय 7, और लैव्यव्यवस्था का यह सम्पूर्ण पहला भाग (अध्याय 1-7) एक सारांश के कथन के साथ समाप्त होता है।[10]

आयतें 37, 38. इन शब्दों के साथ, यहोवा ने यह संकेत दिया कि इस्राएलियों के निवासस्थान में बलिदान चढ़ाने के विषय में उसने अपना मूल प्रकाशन समाप्त कर लिया था। इसी कारण, पाठक, इन शब्दों के तुरंत बाद एक नए भाग के आरम्भ होने की आशा रखेगा - और, वास्तव में, अध्याय 8 के साथ एक नया भाग आरम्भ होता है।

सारांश कई बलिदानों के क्रम में सूची बनाता है जैसा कि उन पर अध्याय 6-7 में चर्चा की गई थी। इसमें केवल एक आश्चर्य की बात है: **याजकों के संस्कार की एक बलि का** सम्मिलित किया जाना, जिसका किसी भी सारांशित अध्याय में इस नाम से विवरण नहीं दिया गया था। ऐसा हो सकता है कि 7:37 में "याजकों के संस्कार की बलि" अन्न बलियों का सन्दर्भ देती है जिन्हें महायाजक के द्वारा और उसके लिए बनाया जाता था (6:19-23)।[11]

यह भाग उसी तरह समाप्त होता है जैसे आरम्भ हुआ था, इस बात पर बल देते हुए कि इसमें जो व्यवस्थाएँ लिखी गईं हैं वे **यहोवा** के द्वारा दी गईं आज्ञाएँ थीं (7:38)। आरम्भिक कथन यह स्पष्ट करता है कि वे आज्ञाएँ "मिलाप वाले तम्बू" (निवासस्थान) में दी गई थीं; उपसंहार कहता है कि वे **सीनै के जंगल में** दी गई थीं, जिसका अर्थ है कि इस्राएलियों ने इन बलिदानों को जंगल में ही चढ़ाना आरम्भ कर दिया था।

सबसे महत्वपूर्ण तथ्य बाद में दोहराया गया है: यहोवा ने **इस्राएल के पुत्रों** को (ये) बलिदान चढ़ाने की **आज्ञा** दी। ये आज्ञाएँ थीं, न कि सुझाव। ये अध्याय परमेश्वर के लोगों के धार्मिक जीवन के एक महत्वपूर्ण भाग का विवरण देते हैं।

अनुप्रयोग

"सब को एक समान" (7:10)

लैव्यव्यवस्था 7:10 में, हम पढ़ते हैं, "और सब अन्नबलि, जो चाहे तेल से सने हुए हों चाहे रूखे हों, वे हारून के सब पुत्रों को एक समान मिले।" स्पष्ट तौर पर, यह नियम किसी स्वार्थी याजक को उस भाग को अपने पास रखने से रोकने के लिए था जो सभी याजकों के लिए होने की नीयत से था।

जेम्स बर्टन कोफ़्फ़मैन ने कहा कि KJV में यह भाव, "एक के समान दूसरे को

भी," "यह कहने का एक प्राचीन तरीका प्रतीत होता है कि, बंटवारा करो और एक समान करो,"[12] यह विचार कि इन बलिदानों को "सभी को एक समान" बाँटा जाना चाहिए प्रारंभिक कलीसिया के दृष्टिकोण और कार्यों की याद दिलाता है:

> और सब विश्वास करने वाले इकट्ठे रहते थे, और उनकी सब वस्तुएँ साझे में थीं (प्रेरितों 2:44)।
>
> विश्वास करने वालों की मण्डली एक चित्त और एक मन की थी, यहाँ तक कि कोई भी अपनी सम्पत्ति अपनी नहीं कहता था, परन्तु सब कुछ साझे में था (प्रेरितों 4:32)।

हमें "सभी को एक समान" दृष्टिकोण - "सभी से साझा करने और एक समान रूप से साझा करने" की इच्छा रखने का प्रयास करना चाहिए। बाइबल निजी स्वामित्व के अधिकार का बचाव करती है, परन्तु यह परमेश्वर के लोगों से उदारतापूर्वक दूसरों के साथ साझा करने का आग्रह करती है।

परमेश्वर के लिए चढ़ाए जाने वाले बलिदान (अध्याय 1-7)

लैव्यव्यवस्था वहाँ से आरम्भ होती है जहाँ से निर्गमन समाप्त होता है, जब निवासस्थान को बनाने का कार्य पूरा हो गया था। निर्गमन के अंतिम अध्याय में, हम पढ़ते हैं कि निवासस्थान को खड़ा किया गया था "और परमेश्वर के तेज ने निवासस्थान को भर दिया" (निर्गमन 40:34)। इसके बाद, लैव्यव्यवस्था 1:1-3 में, हम पढ़ते हैं,

> यहोवा ने मूसा को बुलाकर मिलापवाले तम्बू में से उससे कहा, "इस्राएलियों से कह कि तुम में से यदि कोई मनुष्य यहोवा के लिये पशु का चढ़ावा चढ़ाए, तो उसका बलि पशु गाय-बैलों अथवा भेड़-बकरियों में से एक का हो। यदि वह गाय-बैलों में से होमबलि करे, तो निर्दोष नर मिलापवाले तम्बू के द्वार पर चढ़ाए कि यहोवा उसे ग्रहण करे।"

निवासस्थान के खड़े किए जाने के बाद, कार्य का सबसे पहला क्रम इस्राएल को उन बलिदानों के विषय में निर्देश देना था जो उन्हें वहाँ चढ़ाने थे।

परमेश्वर के लोगों ने इस समय बलिदान चढ़ाना आरम्भ नहीं किया था। बल्कि, बाइबल के इतिहास के आरम्भ से ही, लोगों ने उसी प्रकार के बलिदानों को चढ़ाया था जिनके विषय में लैव्यव्यवस्था में बात की गई है।[13] लैव्यव्यवस्था के पहले सात अध्याय, इसी कारण, लोगों को बलिदानों का परिचय नहीं देते। बल्कि, इन्होंने व्याख्या की और बताया कि जो बलिदान वे चढ़ा रहे थे वे निवासस्थान की सेवा में किस प्रकार चढ़ाए जाने थे।

इस्राएल के बलिदान

लैव्यव्यवस्था 1-7[14] में पाए जाने वाले, बलिदानों के विषय में प्रारम्भिक निर्देश, पाँच प्रकार के बलिदानों के विषय में हैं।[15]

होमबलियाँ(1:1-17; 6:8-13)। पहला वर्णित बलिदान "होमबलि।" जो पशु चढ़ाए जाते थे वे "मवेशियों" या "भेड़ बकरियों के झुण्ड" में से चढ़ाए जा सकते थे। किसी भी मामले में, यह एक "निर्दोष नर पशु" होता था। इसे आराधक के द्वारा निवासस्थान में लाया जाता था, और इसके बाद वह बलिपशु के "सिर पर अपना हाथ रखता" (1:4)। उसकी ज़िम्मेदारी उसे वध करने और टुकड़ों में काटने की भी थी। इसके बाद याजक पशु के टुकड़ों को वेदी की आग पर रखता और उसका लहू वेदी के चारों और छिड़कता। वैकल्पिक तौर पर, पक्षी (कबूतर या पंडुक) भी चढ़ाए जा सकते थे। उन्हें याजक के द्वारा मारा जाता (आराधक के द्वारा नहीं) और इसके बाद वेदी पर चढ़ा दिया जाता (1:15-17)। प्रत्येक मामले में, होमबलि "यहोवा के लिए सुखदायक सुगंध" ठहरती (1:9, 13, 17) - यह ऐसा कहने का एक तरीका था कि इसने परमेश्वर को प्रसन्न किया है।

होमबलि में अन्य बलियों से इस प्रकार अंतर था कि इस में सम्पूर्ण पशु (या पक्षी) वेदी पर आग के द्वारा भस्म हो जाता था। आराधक, उसके सिर पर हाथ रखने के द्वारा स्वयं को उसके समान ठहराता था। सम्भवतः उसका जलना यहोवा के लिए पशु के पवित्र किए जाने का संकेत था और इसी कारण यह परमेश्वर के लिए आराधक का सम्पूर्ण पवित्रीकरण था।

अन्न बलियाँ(2:1-16; 6:14-23)। NASB में "अन्न बलियाँ" RSV में "अनाज बलियों" के रूप में अनुवाद की गई हैं। यह मैदे से बनी होती थी और इसे या तो तेल या लोबान के साथ मिलाया जाता था। बलिदान जो भी रूप लेता, अन्न बलि का केवल छोटा सा भाग ही वेदी पर याजक के द्वारा जलाया जाता था; इसका शेष भाग याजकों को दिया जाता था और उनके द्वारा खाया जाता था। इस प्रकार के प्रत्येक बलिदान का खमीर रहित होना आवश्यक था, परन्तु इसमें "नमक भी मिलाया" जाता था, इस्राएलियों को वह वाचा स्मरण दिलाने के लिए जो उन्होंने परमेश्वर के साथ बाँधी थी। जब इसे वेदी पर जलाया जाता, तो इसका परिणाम, "यहोवा के लिए एक सुखदायक सुगंध होता था" (2:9; 6:15)। जब पहले फलों को तोड़ा जाता, तो लोग यहोवा के लिए अन्नबलि लेकर आया करते थे। सम्भवतः, अधिकांश अन्नबलियाँ अन्य बलियों के संयोजन से मिलकर बनी होती थीं - जो ये है कि - उन्हें होमबलियों या मेलबलियों के साथ चढ़ाया जाता था।

मेल बलियाँ (3:1-17; 7:11-36)।[16] "मेलबलि" के लिए शब्द "शान्ति" इब्रानी शब्द שָׁלוֹם *(शालोम)* से निकटता से सम्बन्धित है, जो किसी के कल्याण का सन्दर्भ देता है। मेल बलि मवेशियों या भेड़-बकरियों में से लिए गए किसी एक पशु से मिलकर बनी होती थी। पशु नर या मादा हो सकता था, परन्तु उसका "निर्दोष" होना आवश्यक था। एक पशु के बलिदान को एक अन्नबलि के साथ चढ़ाना पड़ता था (7:12, 13)। पशु के केवल कुछ निश्चित भाग ही याजक के द्वारा

वेदी पर जलाए जाते थे - चर्बी, गुर्दे, और कलेजा। दूसरा भाग उस याजक को दे दिया जाता था जिसने उसे बलि किया था, और उसे उसको उसी दिन खाना आवश्यक था। माँस के अन्य भाग उस आराधक के लिए भोजन के रूप में दे दिया जाता था जो उसे पशु को मेलबलि के रूप में लेकर आया था (7:15, 16)। चूंकि बलिदान यहोवा, याजकों, और लोगों के द्वारा साझा किया जाता था सम्भवतः यह कहा जा सकता है कि मेलबलि चढ़ाने का उद्देश्य मनुष्य और परमेश्वर, और एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य के बीच में शान्ति का उत्सव मनाने और इसे बनाए रखना था।

तीन प्रकार की मेल बलियों का वर्णन किया गया है: "धन्यवाद" की बलियाँ (7:12), "मन्नत" बलियाँ (एक मन्नत के पूरा करने से सम्बन्धित), और "स्वेच्छा" बलियाँ (7:16)। होमबलियों और अन्नबलियों के समान ही, मेलबलियों का परिणाम भी "यहोवा के लिए एक सुखदायक सुगंध था" (3:5)।

मेलबलि का अनूठा गुण यह था कि मेलबलि सामुदायिक स्वभाव की थी। पशु के एक भाग को जलाए जाने और एक भाग को याजक को दिए जाने के बाद, आराधक शेष भाग को आपस में बाँट लेते थे जिसे हम एक "सहभागिता भोजन" कह सकते हैं।

पापबलियाँ(4:1-5:13; 6:24-30)।[17] अध्याय 4 में, पापबलि के लिए निर्देश बताते हैं कि चार विशिष्ट परिस्थितियों में पाप के मामले में क्या किया जाना चाहिए: (1) यदि "अभिषिक्त याजक पाप करता है" (4:3-12); (2) यदि "पूरी मण्डली" पाप करे (4:13-21); (3) यदि "एक अगुवा पाप करे" (4:22-26); और (4) यदि "सामान्य लोगों में कोई एक पाप करे" (4:27-35)। इन सभी परिस्थितियों के लिए पापबलि में कई बातें एक समान थीं:

यह पाप निश्चय ही "अनजाने" में किया गया था (4:2, 22, 27)। अनजाने में किए गए किसी पाप के विपरीत, कोई "विद्रोहपूर्वक" पाप कर सकता था (गिनती 15:30)। यदि उसने ऐसा किया था, उसके पापों की क्षमा के लिए किसी भी बलिदान का प्रावधान नहीं किया गया था; उसे "उसके लोगों के बीच में से नष्ट" कर दिया जाता था (गिनती 15:30)।

पापबलि के रूप में एक पशु का उपयोग किया जाता था। पशु का "निर्दोष" होना आवश्यक था (4:3, 23, 28, 32)।

जिसने पाप किया था उसके द्वारा पशु के मारने से पहले उसे उसके सिर पर हाथ रखना पड़ता था (4:4, 24, 29, 33)। ऐसा करने के द्वारा, वह संकेत करता था कि, एक भाव से, पशु ने उसका स्थान लिया था।

बलिपशु का लहू एक याजक के द्वारा "पवित्रस्थान के पर्दे के सामने" छिड़का जाता था (4:6) और, एक मामले में, धूप वेदी के सींगो पर लगाया जाता था (4:7)। अन्य मामलों में, इसे होमबलि की वेदी के सींगो पर लगाया जाता था और इसे वेदी की तली में उंडेल दिया जाता था।

बलिपशु के एक भाग को वेदी पर जलाया जाता था; उसका एक भाग छावनी

के बाहर जलाया जाता था; और उसका एक भाग "एक पवित्र स्थान में" याजकों के द्वारा खाया जाता था (6:26)।

यदि बलिदान को उचित तौर पर चढ़ाया गया था, तो जिस व्यक्ति के लिए इसे चढ़ाया गया था उसके पाप क्षमा हो जाएंगे (4:20, 26, 31, 35)।

पापबलि ने विभिन्न प्रकार की बलियों के लिए प्रावधान किया, जो आराधक की आर्थिक क्षमता पर आधारित था (देखें 5:6-13)। सामान्य तौर पर, एक पशु को चढ़ाया जाता था। यदि कोई एक पशु को चढ़ाना वहन नहीं कर सकता था, तो वह दो पक्षियों को चढ़ा सकता था। यदि कोई पक्षियों को चढ़ाना भी वहन नहीं कर सकता था, तो वह आटे की एक छोटी मात्रा चढ़ा सकता था।

दोष बलियाँ (5:14-6:7; 7:1-7)।[18] "दोषबलि" को KJV और NKJV में "अपराध बलि" और REB और NJB में "प्रायश्चित्त बलि" कहा गया है। दोषबलि कई प्रकार से पापबलि के समान थी। उदाहरण के लिए, यह, केवल अनजाने में किए गए पापों के लिए चढ़ाई जाती थी; जिस प्रकार से पशुओं को चढ़ाया जाता था वे पाप बलि में जिस प्रकार पशुओं को बलि किया जाता था उसी के समान थे; और इसका परिणाम चढ़ाने वाले के लिए पाप क्षमा होता था।

दोषबलि से सम्बन्धित नियम यह स्पष्ट करते हैं कि पापी को उस बुरे कार्य की "क्षतिपूर्ति" करनी पड़ती थी जो उसने किया था (5:16; देखें 6:4)। यह तथ्य यह संकेत कर सकता है कि पापबलि और दोषबलि के मध्य यह अन्तर था कि पापबलि की मंशा परमेश्वर के विरुद्ध किए गए पापों के लिए प्रायश्चित्त करने की हो सकती थी - आम तौर पर परमेश्वर की विधियों को तोड़ने के लिए। दूसरे हाथ पर, दोषबलि की मंशा विशेषतः अन्य लोगों के विरुद्ध किए गए पापों के लिए प्रायश्चित्त करने की थी - वे विशिष्ट पाप जिनके लिए पापी को अंगीकार की आवश्यकता थी और जिनके लिए वह क्षतिपूर्ति कर सकता था।

आइए अब हम बलिदान प्रणाली के सिद्धांतों को सारांशित करते हैं।

सभी बलिदान यहोवा को चढ़ाए गए थे। उनमें से कुछ भागों को याजक या आराधक के द्वारा खाया जा सकता था, परन्तु प्राथमिक प्राप्तकर्ता स्वयं परमेश्वर था।

बलिदान चढ़ाना आवश्यक था। हम इस प्रणाली के विवरण और विनियमन को दिए गए स्थान की मात्रा पर आश्चर्यचकित हो सकते हैं। हालाँकि, इस विषय पर बिताए गए समय में कम से कम एक बात पर बल दिया गया है: परमेश्वर ने यह सोचा कि यह महत्वपूर्ण था। यदि यह उसके लिए महत्वपूर्ण था, तो उन लोगों के लिए यह आवश्यक था जिनके लिए उसने पहले निर्देश दिए थे।

बलिदानों के विषय में परमेश्वर के निर्देशों का पालन करना भी आवश्यक था। इस कथन के पीछे का तर्क यह है: यदि नियम महत्वहीन या अनावश्यक थे, तो परमेश्वर ने इन्हें बताने का जोखिम नहीं उठाया होता! नादाब और अबीहू ने सीखा कि कोई भी दण्ड-मुक्ति के साथ परमेश्वर के नियम अनदेखे नहीं कर सकता (10:1-3)।

परमेश्वर के लिए यह आवश्यक था कि इस्राएली उसे उनका उत्तम दें (1:3, 10; 4:23, 28, 32; 5:15)। परमेश्वर अंतिम फल नहीं चाहता था; वह पहले फल चाहता था। वह मवेशियों और भेड़ बकरियों के उत्तम भाग चाहता था, न कि बचे-कुचे। जो पशु इस्राएली चढ़ाते थे उनका "निर्दोष" होना आवश्यक था।

बलिदान कई उद्देश्यों को पूरा करते थे। इस्राएली परमेश्वर के प्रति अपना धन्यवाद व्यक्त कर सकते थे। वे एक दूसरे के साथ सहभागिता की रचना कर सकते थे और उसे बनाए रख सकते थे। बलिदान याजकों और लेवियों के लिए सहयोग प्रदान करते थे (2:3, 10; 5:13; 6:16-18; 7:31-36)। वे ऐसे तरीके थे जिन्हें परमेश्वर ने इस्राएलियों को उनके पापों की क्षमा के लिए प्रदान किए थे।

उन पशुओं के ऊपर अपने हाथ रखने के द्वारा जो बलि किए जाते थे, इस्राएली अपने आप को उन पशुओं के रूप में मान्यता देते थे। इसी कारण, जो कुछ पशुओं के साथ होता था वह आराधक से सम्बन्धित किसी बात का प्रतिनिधित्व करता था। होमबलि के मामले में, पशु का आग में भस्म हो जाना आराधक के सम्पूर्ण समर्पण का प्रतिनिधित्व करता होगा। पापबलि के मामले में, पापी का हाथ रखना पशु में पाप के स्थानान्तरण होने का प्रतीक रहा होगा। इस मामले में पशु की मृत्यु उस मृत्यु का प्रतिनिधित्व करती थी जिसके योग्य पापी था और पशु के लहू के बहाए जाने के कारण उससे बच गया था।

यद्यपि कुछ बलिदान स्वैच्छिक थे, पाप के लिए बलिदान क्षमा प्राप्ति के लिए आवश्यक थे। उदाहरण के लिए, कोई, अपनी पसंद के अनुसार मेलबलियाँ ला सकता था; परन्तु यदि उसे यह ज्ञात था कि उसने पाप किया है, तो उसे क्षमा प्राप्ति के लिए पाप या दोषबलि लानी पड़ती थी।

यदि कोई किसी विशिष्ट पाप की क्षमा चाहता था तो उसे उस पाप का अंगीकार करना पड़ता था और क्षमा प्राप्ति से पहले उसकी क्षतिपूर्ति करनी पड़ती थी। उसके दृष्टिकोण पर ध्यान दिए बिना या अन्यथा उसने जो किया उसके ऊपर ध्यान दिए बिना, इस प्रणाली ने पापी के लिए स्वचालित माफ़ी नहीं दी जाती थी। प्रणाली के अधीन क्षमा प्राप्त करने के लिए, उसे अपने पाप से अवगत होना पड़ता था; उसे अपने पाप के लिए खेदित होना पड़ता था; उसे अपना पाप स्वीकार करना पड़ता था; उसे अपने पाप के लिए क्षतिपूर्ति करनी पड़ती थी; और फिर उसे अपने पाप के लिए एक बलिदान देना पड़ता था। उस तरह की प्रणाली गर्व या पाखंड को प्रोत्साहित नहीं करती है; यह धार्मिकता को प्रोत्साहित करती है।

मूसा की बलिदान की प्रणाली के अधीन पापों की क्षमा के लिए लहू बहाया जाता था। पुरानी वाचा के अधीन लहू पापों के लिए प्रायश्चित्त प्रदान करता था क्योंकि यह बलिपशु के जीवन का प्रतिनिधित्व करता था (17:11); पशु का जीवन पापी के जीवन के स्थान पर प्रतिस्थापन का कार्य करता था। हम यह समझते हैं कि वे पुराने नियम के बलिदान यीशु मसीह के सबके-लिए-एक ही बार बलिदान बनने की अपेक्षा एक प्रकार से अधूरे बलिदान थे, जिसका लहू उन पापियों को भी क्षमा करता है जो क्रूस से पहले थे और इसके साथ ही उनको भी जो क्रूस के बाद हुए।

आज हमारे बलिदान

मूसा की व्यवस्था के अधीन चढ़ाए गए बलिदानों से हमारा क्या सम्बन्ध है? स्पष्ट है, चूंकि मूसा की व्यवस्था को हटा दिया गया है, इसलिए इसकी बलिदान प्रणाली अब काम नहीं करती है। इसलिए, हमें उस प्रकार के बलिदान नहीं चढ़ाने पड़ेंगे जो इस्राएलियों ने चढ़ाए थे। विशेष रूप से, पशुओं के लहू पर निर्भर प्रायश्चित प्रणाली को मसीही की प्रणाली द्वारा प्रतिस्थापित किया गया है जो मसीह के लहू के प्रायश्चित्त बलिदान पर निर्भर करता है। यह यीशु का लहू है, न कि बैल और बकरियों का लहू, जो हमारे पापों को दूर करता है!

तौभी, नए नियम के साथ-साथ पुराने नियम में बलिदान देने का विचार मिलता है। मसीहियों को भी बलिदान चढ़ाने हैं। हमें क्या बलिदान चढ़ाने हैं? हमें अपने परमेश्वर को क्या देना चाहिए?

हमारे शरीरों को एक जीवित बलिदान बनना है। नया नियम में हमें अपने शरीरों को चढ़ाने की आवश्यकता है। पौलुस ने लिखा, "इसलिये हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूँ कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ। यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है" (रोमियों 12:1)। पशुओं की देह चढ़ाने के बजाय, हमें अपने शरीरों को परमेश्वर को चढ़ाना है। मृत पशुओं की लोथ चढ़ाने के बजाय, हमें अपने शरीरों को *जीवित* बलिदान के रूप में चढ़ाना है। हम बलिदान के रूप में मृत पशुओं के भाग होमबलि की वेदी पर नहीं देते; आज, हमें एक जीवित बलिदान देना है - हम जो कुछ भी हैं - हमारे प्रभु के लिए!

पौलुस के उपदेश का क्या अर्थ था? शेष रोमियों 12 उसकी चुनौती की व्याख्या करने में सहायता करता है। अपने शरीरों को एक जीवित बलिदान के रूप में देने के लिए, हमें इस संसार के सदृश बनने का इनकार करना है (रोमियों 12:2)। हमें अपने वरदानों को परमेश्वर की सेवा में उपयोग करना है (रोमियों 12:3-8) और आगे की कुछ आयतों में वर्णित सदगुणों वाला जीवन जीना है (रोमियों 12:9-16)। हमें बुराई के बदले बुराई नहीं करनी चाहिए; बल्कि इसके बजाय, हमें सभी मनुष्यों के साथ शान्ति से जीना है और बुराई के बदले भलाई करनी है (रोमियों 12:17-21)। अपने शरीरों को परमेश्वर के सामने बलिदान के रूप में चढ़ाना, दूसरे शब्दों में, हमारे सभी सम्बन्धों में एक विश्वसनीय मसीही जीवन जीना की मांग करता है।

हमारी प्रार्थनाओं को धूप के समान बनना है। जब हम परमेश्वर से प्रार्थना करने के लिए अपनी वाणियों का उपयोग करते हैं, तो हमारी वाणियों को उसको चढ़ाए गए बलिदान समझे जाते थे। प्रकाशितवाक्य 5:8 में हम पढ़ते हैं, "जब उसने पुस्तक ले ली, तो वे चारों प्राणी और चौबीसों प्राचीन उस मेमने के सामने गिर पड़े। उनमें से हर एक के हाथ में वीणा और धूप से भरे हुए, जो पवित्र लोगों की प्रार्थनाएँ हैं, सोने के कटोरे थे।" "पवित्र लोगों की प्रार्थनाएँ" इन्हें प्रतीकात्मक रूप से "धूप" कहा गया है। पुराने नियम में, धूप परमेश्वर को एक याजक दे द्वारा धूप

की वेदी पर चढ़ाई जाती थी और इसमें होमबलि की वेदी पर अन्य बलिदान भी सम्मिलित होते थे। इसी कारण, इसे, यहोवा को चढ़ाया जाने वाला एक बलिदान समझा जा सकता है। यह वाक्यांश संकेत करता है कि हमारी प्रार्थनाएं धूप के समान हैं - परमेश्वर को एक बलिदान, निःसंदेह एक मीठी सुगंध जो उसे प्रसन्न करती है। यह मानते हुए कि हमारी प्रार्थनाएं परमेश्वर के लिए धूप के समान हैं, आइए हम और अधिक नियमित तौर पर और निरन्तर प्रार्थना करें।

हमारे गीतों को स्तुति के बलिदान बनना है। हमारा परमेश्वर की स्तुति करने के लिए अपनी वाणी का बलिदान चढ़ाना आवश्यक है। इब्रानियों 13:15 कहता है, "इसलिये हम उसके द्वारा स्तुतिरूपी बलिदान, अर्थात् उन होंठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर को सर्वदा चढ़ाया करें।" यह वाक्यांश सिखाता है कि हमारे होंठों को किस प्रकार उसे समर्पित किया जा सकता है यदि हम उसकी स्तुति करने के लिए अपनी वाणी का उपयोग करें। एक बार फिर, जब हम परमेश्वर के मंदिर, कलीसिया, में उसकी आराधना करने के लिए आते हैं, हम वेदी के लिए पशु लेकर नहीं आते। बल्कि, हम अपनी वाणियाँ लेकर आते हैं, और उन्हें परमेश्वर की स्तुति करने के लिए उपयोग करते हैं! जिस प्रकार पुराने नियम में परमेश्वर बलिदानों की सुगंध से प्रसन्न था, हमारी हृदय की स्तुति उसके कानों के लिए एक मधुर ध्वनि है।

इस बिंदु पर, हमें स्वयं को परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए बलिदानों के प्रकार स्मरण करवाने की आवश्यकता है। पुराने नियम के समयों में, परमेश्वर उत्तम चाहता था। हम इस बात से सुनिश्चित हो सकते हैं कि वह अब भी चाहता है कि हम उसे अपना सबसे उत्तम चढ़ाएं। हो सकता है हम ठीक से न गाते हों, परन्तु हम जितना अच्छा गा सकते हैं उतना गाना चाहिए। मण्डली में गीत इतना अच्छा न सुनाई पड़े जितना एक पेशेवर क्वायर में, परन्तु हमें उसे उतना अच्छा करना चाहिए जितना हम कर सकते हैं। जब हम उसके लिए गाते हैं तो परमेश्वर हमसे हमारे उत्तम की आशा रखता था और वह इसके योग्य भी है।

हमारे भले कामों को एक सेवा का बलिदान बनना है। हमें परमेश्वर को भले कामों का एक बलिदान चढ़ाना है। इब्रानियों 13:16 आयत 15: में बताए गए "बलिदान" के विचार को आगे बढ़ाता है, "भलाई करना और उदारता दिखाना न भूलो, क्योंकि परमेश्वर ऐसे बलिदानों से प्रसन्न होता है।" प्रेरित लेखकों ने नए नियम में हर कहीं इस बात पर बल दिया है कि मसीहियों को दूसरों की भलाई करनी है। हमें अपने सांसारिक सामान को साथी मनुष्यों के साथ बांटना है। पौलुस ने कहा, "इसलिये जहाँ तक अवसर मिले ... हम सब के साथ भलाई करें" (गला. 6:10)। यीशु ने हमें आज्ञा दी कि हमारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके ताकि वे हमारे भले कामों को देखकर हमारे स्वर्गीय पिता की महिमा करें (मत्ती 5:16)। पौलुस ने लिखा कि हम सभी अनुग्रह के द्वारा बचाए गए हैं, "और मसीह में भले कामों के लिए सृजे गए हैं" ताकि "हम उनमें चल सकें" (इफि. 2:8-10)। याकूब ने संकेत किया कि सच्ची धार्मिकता में अनाथों और विधवाओं की देखभाल करना भी सम्मिलित है (याकूब 1:27)। जब यीशु ने न्याय का वर्णन किया, उसने कहा कि

लोगों का न्याय उनके भले कामों के अनुसार किया जाएगा (अथवा उनके भले काम करने की विफलता पर; मत्ती 25:31-46)। इसी कारण, यह सुनना कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि परमेश्वर हमसे भले काम करवाना चाहता है।

हालाँकि, क्या आश्चर्यचकित करने वाला हो सकता है, यह तथ्य कि हमारे भले काम और हमारे साझा करने के कामों को "बलिदानों" के समान समझा जाता है। पुराने नियम में परमेश्वर को बलिदान चढ़ाए जाते थे। जब हम भले काम करते हैं, तो हम परमेश्वर को बलिदान चढ़ा रहे होते हैं, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार व्यवस्था के अधीन लोग किया करते थे। चाहे बलिपशु अंत में आराधकों द्वारा खाया जाता या याजकों के पास चला जाता, उन्हें फिर भी परमेश्वर को अर्पित किया हुआ समझा जाता था। हो सकता है इसीलिए यीशु ने कहा कि किसी व्यक्ति को कुछ खाने के लिए देना और कुछ पहनने के लिए देना वास्तव में उसे खिलाना और वस्त्र पहनना है (मत्ती 25:35, 36, 40)। जब हम इस चुनाव से घिरे होते हैं कि किसी की सहायता करें कि नहीं, किसी बाटें या नहीं, या किसी की भलाई करें या नहीं, तो हमें इस सत्य को स्मरण रखना चाहिए। सम्भवतः यह हमें सही बात करने का निर्णय लेने में सहायता करेगा। परमेश्वर केवल भले कामों के बलिदानों से ही प्रसन्न नहीं होता, परन्तु साथी मनुष्य की भलाई करना भी स्वयं परमेश्वर को बलिदान चढ़ाने के समान है।

हमारे योगदान एक सुखदायक सुगंध के समान हो। जब हम सुसमाचार फैलाने के लिए आर्थिक तौर पर देते हैं, तो हम अपने धन को परमेश्वर को चढ़ाते हैं। पौलुस ने, फिलिप्पियों को लिखी अपनी पत्री के अंत में लिखा, "मेरे पास सब कुछ है, वरन् बहुतायत से भी है; जो वस्तुएँ तुम ने इपफ्रुदीतुस के हाथ से भेजी थीं उन्हें पाकर मैं तृप्त हो गया हूँ, वह तो सुखदायक सुगन्ध, ग्रहण करने योग्य बलिदान है, जो परमेश्वर को भाता है" (फिलि. 4:18)। पौलुस को कुछ वस्तुओं की घटी थी; परन्तु फिलिप्पी की कलीसिया ने, इपफ्रुदीतुस के हाथ से कुछ योगदान भेजकर उसकी आवश्यकताओं को पूरा किया था। पौलुस ने कहा कि उनके धन का उपहार "एक सुखदायक सुगंध, एक ग्रहण करने योग्य बलिदान" था जो "परमेश्वर को भावता" था। उन्होंने एक मिशनरी की सहायता करने के लिए अपना धन दिया, और पौलुस ने कहा जो उन्होंने दिया था वह परमेश्वर को एक बलिदान था!

तो, यहाँ पर मिशन कार्य की सहायता करने का एक और कारण है: हमारे उपहार केवल आत्माओं को बचाने में सहायता ही नहीं करेंगे, बल्कि वे परमेश्वर के लिए एक बलिदान का कार्य भी करेंगे! सम्भवतः हम इस परिणाम पर पहुंच सकते हैं कि जो धन हम प्रभु के कार्यों के लिए देते हैं उन्हें प्रभु के लिए बलिदान चढ़ाना समझा जा सकता है। यह सत्य है चाहे हम सप्ताह के पहले दिन अपने दान दें अथवा, उदाहरण के लिए, बाइबल रहित लोगों तक बाइबल भेजने के लिए हम जो धन देते हैं।

क्या आप अपने धन को सबसे अर्थपूर्ण ढंग से उपयोग करना चाहते हैं? तो परमेश्वर को दें! जो धन आप परमेश्वर को उसकी कलीसिया के कार्य के लिए देते हैं वह एक "सुखदायक सुगंध है, और परमेश्वर को भाता हुआ एक ग्रहण करने

योग्य बलिदान है"!

हमारे जीवन मृत्यु तक विश्वासयोग्यता का प्रदर्शन करें। प्रभु हमें उसके या उसके लोगों के लिए मरकर अपने जीवन देने के लिए तैयार होने के लिए कहता है, यदि हमें ऐसा करने के लिए बुलाया गया है। यद्यपि कोई पवित्रशास्त्र स्पष्ट रूप से कहता है कि शहीद की मृत्यु परमेश्वर के लिए बलिदान है,[19] कई वाक्यांश बताते हैं कि हमें अपने जीवन को मसीह के कारण देने के लिए तैयार रहना चाहिए। प्रेरित यूहन्ना ने लिखा, हम ने प्रेम इसी से जाना कि उसने हमारे लिये अपने प्राण दे दिए; *और हमें भी भाइयों के लिये प्राण देना चाहिए* (1 यूहन्ना 3:16; बल दिया गया है)। जब यीशु ने कहा, "जो कोई मेरे लिए अपन प्राण खोएगा वह उसे पाएगा" (मत्ती 16:25), वह यह कह रहा था कि कुछ लोग उसके लिए अपने प्राण देंगे परन्तु उन्हें ऐसा करने के लिए आशीष दी। लूका 14:26 में, उसने कहा कि यदि कोई अपने प्राण को अप्रिय न जाने तो मेरा चेला नहीं हो सकता। दूसरे शब्दों में, एक मसीही को अपने प्राण से प्रभु से कम प्रेम करना चाहिए। यदि वह ऐसा करता है तो वह मसीह और उसकी कलीसिया के लिए एक शहीद की मृत्यु सहने के लिए तैयार रहेगा। जब यूहन्ना ने कहा "प्राण देने तक विश्वासयोग्य" (प्रका. 2:10; KJV), तो उसका तात्पर्य यह नहीं रहा होगा वे हमें केवल जीवित रहने तक विश्वासयोग्य रहना है; वह सम्भवतः ये कह रहा था कि हमें तब भी विश्वासयोग्य रहना चाहिए जब उस विश्वासयोग्यता का परिणाम मृत्यु हो। पहली शताब्दी के मसीहियों ने इस चुनौती को स्वीकार किया। पौलुस ने संकेत दिया कि वह मसीह के लिए मरने के लिए तैयार था। प्रेरितों के काम की पुस्तक में, स्तिफनुस और याकूब दोनों मसीह के कार्य के लिए मारे गए (प्रेरितों 7:58-60; 12:1, 2)। बहुत से अन्य लोगों ने भी ऐसा ही किया। पहली तीन शताब्दियों में कलीसिया का इतिहास शहीदों के लहू से रंगे गए पन्नों पर लिखा है।

यीशु ने कहा, "इससे बड़ा प्रेम किसी का नहीं, कि कोई अपने मित्रों के लिए अपना प्राण दे" (यूहन्ना 15:13)। वह एक ऐसे कथन को बता रहा था जिससे हम सभी सहमत हैं। हम महान नायकों की कहानियों से प्रेरित हैं जिन्होंने अपने साथियों को बचाने के लिए युद्ध में स्वयं को बलिदान कर दिया। जो प्रेम और समर्पण उनके ऐसा करने का कारण रहा होगा, उसी प्रकार के प्रेम और समर्पण की हमें आवश्यकता है, क्योंकि हम सभी को अपने प्राणों का बलिदान के लिए बुलाया गया है - हमारे जीवन को देने के लिए - मसीह के कार्य के लिए, मनुष्य को ज्ञात सबसे बड़ा कारण।

क्या आप मसीह के लिए अपने जीवन का बलिदान देने के लिए तैयार हैं, उसके लिए और उसके लोगों के लिए मरने के द्वारा अपना जीवन देने के लिए? यह जानने का एक उपाय है कि आप मसीह के लिए मरेंगे या नहीं: उसके लिए प्रतिदिन जीकर। जो मसीह के लिए नहीं जीएगा वह निश्चित तौर पर उसके लिए नहीं मरेगा।

उपसंहार

परमेश्वर के पवित्र लोग बनने के लिए, इस्राएलियों को स्वयं को संसार से अलग करके परमेश्वर को समर्पित करना पड़ा, तो हमें भी करना पड़ेगा। उन्हें लहू के द्वारा शुद्ध होना पड़ा, हमें भी पड़ा। उन्हें छावनी से अशुद्धता को दूर करना पड़ा, हमें भी संसार के पापों से दूर रहना चाहिए। उन्हें एक ऐसा समुदाय बनने के लिए बुलाया गया था जो यहोवा परमेश्वर की आराधना पर केन्द्रित था, उसी प्रकार हमें भी बुलाया गया है। इसके साथ, वे ऐसे लोग बनने वाले थे जो परमेश्वर बलिदान चढ़ाने के द्वारा देते थे। इसी कारण हमें भी अवश्य देना चाहिए!

आज बहुत से कहते हैं, "जितना तुम रख सकते हो उतना ले लो, जितना तुम्हें मिले उतना रख लो, और जितना आनन्द तुम कर सकते हो उतना करो।" मसीहियों को जीवन को भिन्न प्रकार से देखना चाहिए। मसीहियों को पशुओं के उपहार चढ़ाने की आवश्यकता नहीं, परन्तु हमें निश्चय ही अपने शरीरों, हमारी वाणियों, हमारे भले कामों, हमारे धन, और यदि आवश्यक हो तो, हमारे प्राणों का बलिदान चढ़ाना चाहिए।

परमेश्वर की आराधना करने और सेवा करने के सम्बन्ध में, बहुत से पूछते हैं, "मुझे इससे क्या लाभ होगा?" इसके बजाय हम ये पूछें, "मैं परमेश्वर को किस प्रकार दे सकता हूँ और दूसरों को लाभ किस प्रकार पहुंचा सकता हूँ?"

कोय डी. रोपर

समाप्ति नोट्स

[1]यद्यपि अन्य लोग भी इस मांस को खाते, बलिदान उसी याजक का कहा जाता था जो "उसके द्वारा प्रायश्चित" करता था (7:7); उसे ही पहले खाने का अधिकार था। [2]जे स्क्लर ने कहा कि इन आयतों में "याजकों की व्यावहारिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना" पर बल दिए जाने से "याजक स्वतंत्र होते कि वे यहोवा के लोगों की आराधना में अगुवाई करें और उन्हें उसके नियम सिखाएँ (तुलना करें नहेम्य. 13:10-11)" (जे स्क्लर, *लैव्यव्यवस्था,* द टिन्डेल ओल्ड टेस्टामेंट कॉमेन्ट्रीस [डाउनर्स ग्रोव, इल्लिनोय: इंटरवर्सिटी प्रेस, 2014], 133)। [3]यूजीन ई. कारपेंटर, "सैक्रिफाईसिस एण्ड ओफ्रिंग्स इन द ओटी," *द इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल एन्सैक्लोपीडीया,* रिव. एड., एड. ज्यौफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1988), 4:268. [4]"प्रत्येक चढ़ावे में से एक" (7:14) को अन्य संसकरणों में इस प्रकार अनुवाद किया गया है "प्रत्येक चढ़ावे में से एक रोटी" (NRSV); "प्रत्येक चढावे का एक भाग" (REB); "अपने प्रत्येक चढ़ावे में से वह एक भाग प्रस्तुत करेगा" (NAB); "उसके चढ़ावे में से एक रोटी को अवश्य ही प्रस्तुत किया जाए" (NJB). [5]"उठाने की भेंट" उन के लिए है "बलिदानों और चढ़ावों के जो भाग पृथक कर दिए जाते थे, हटा दिए जाते थे, या उठाए ('उठाना') जाते थे, यहोवा और याजकों के लिए" ("हीव ऑफरिंग," *द इन्टरप्रेटर्स डिक्शनरी ऑफ द बाइबल,* एड. जॉर्ज आर्थर बटरिक [नैशविले: ऐबिन्गडन प्रैस, 1962], 2:551)। [6]ओस्वौल्ड टी. ऐलिस, *द न्यू बाइबल कॉमेन्ट्री: रिवाईज़्ड,* एड. डी. गुथ्री एण्ड जे. ऐ. मौटएयर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1970), 147. गौर्डन जे. वैन्हैम ने इस निषेध के संभावित कारणों की चर्चा की, इस विचार सहित कि जो मांस रातभर रखा गया वह सड़ सकता था, इसलिए खाने योग्य नहीं रहता (दोनों, शारीरिक तथा अनुष्ठान के अनुसार)। (गौर्डन जे. वैन्हैम, *द बुक ऑफ लैव्यव्यवस्था,* द न्यू इंटरनैशनल कॉमेन्ट्री ऑन द ओल्ड

टेस्टामेंट [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1979], 124.) [7]कुछ इब्रानी लेखों में, 7:21 में, "घृणित वस्तु" (שֶׁקֶץ, *शेकेत्स)* के स्थान पर, "झुण्ड बनाने वाली वस्तु" (שֶׁרֶץ, *शेरेत्स)* के लिए प्रयुक्त शब्द है। [8]"हिलाने की भेंट" यथार्थ में "हिलाने की भेंट के समान हिलाई जाए" है। [9]"हिलाने की भेंट" पर बहुत विद्वतापूर्ण चर्चाएं हुई हैं। जौन ई. हार्टले का निष्कर्ष था कि शब्द תְּנוּפָה *(थेनुपह)* का तात्पर्य चढ़ावे को, परमेश्वर को समर्पित किए जाने के भाव में, उठाए जाने, या ऊँचा किए जाने से है। (जौन ई. हार्टले, *लैव्यव्यवस्था,* वर्ड बिबलिकल कॉमेन्ट्री, वोल. 4 [डैलस: वर्ड बुक्स, 1992], 91-92.) हिलाना या उठाना, भिन्न प्रकार के चढ़ावे को दिखाने के स्थान पर, मेलबलि चढ़ाने के अनुष्ठान का भाग हो सकता था। ("सैक्रिफाइसियल औफेरिंग्स," *नेल्सन्स इल्लसट्रेटिड बाइबल डिक्शनरी,* एड. हरबर्ट लौकयेर, सीनियर [नैशविले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1986], 935.) [10]आर. के. हैरिसन ने इसे एक "सारांश कथन" एक "कालफ़न" (पुष्पिका) कहा और इसकी तुलना प्राचीन मेसोपोटामिया के दस्तावेजों में पाए गए इसी के समान कथनों से की। इन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि या "कालफ़न" यह प्रमाण प्रदान करता है कि लैव्यव्यवस्था (कम से कम पुस्तक का यह भाग) की तिथि निश्चय ही दूसरी सहस्राब्दी ई.पू. होनी चाहिए, जो पेंटाटुएक के मूसा के द्वारा लिखे होने का प्रमाण प्रदान करता है। (आर. के. हैरिसन, *लैव्यव्यवस्था,* द टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज़ [डाउनर्स ग्रोव, इल्लिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1980], 84-87.)

[11]इस स्पष्ट विसंगति के विषय में, बारुक ए. लेविन ने लिखा कि, हालांकि इस आयत में उल्लिखित सभी अन्य बलिदानों के विवरण हैं, "परन्तु याजकों के संस्कारों के कोई भी वर्णन नहीं है। अध्याय 6-7 में संदर्भ का महायाजक द्वारा प्रदान किया गया और 6:12-16 में निर्धारित किया गया एकमात्र संभावित बिंदु *मिन्हाह* होलोकॉस्ट होगा [अंग्रेजी: 6:19-23]" (बारुक ए. लेविन, *लैव्यव्यवस्था,* जेपीएस टोराह कमेंट्री [फिलाडेल्फिया: ज्यूइश पब्लिकेशन सोसाइटी, 1989], 47)। [12]जेम्स बर्टन कोफ़मैन, *कमेंट्री ऑन द लेवीटिकस एंड नंबर्स* (अबीलेन, टेक्स.: एसीयू प्रेस, 1987), 56. [13]नूह ने जल प्रलय के बाद "होम बलियाँ" चढ़ाईं (उत्पत्ति 8:20); परमेश्वर ने अब्राहम को अपने पुत्र इसहाक को "होमबलि" करके चढ़ाने को कहा (उत्पत्ति 22:2); मूसा ने उस समय "होम बलियों" के विषय में बात की जब उसने फिरौन से इस्राएल के लोगों को जाने और जाकर अपने परमेश्वर की आराधना करने की अनुमति मांगी (निर्गमन 10:25); व्यवस्था ने मिट्टी की बनाई गई वेदियों का प्रावधान किया जहाँ "होमबलियाँ" और "मेलबलियाँ" चढ़ाई जा सकती थीं (निर्गमन 20:24); और मूसा के परमेश्वर द्वारा दिए बलिदानों को लोगों को बताने के बाद "जवान पुरुष" "होम बलियाँ" चढ़ाईं और "जवान बैलों को मेल बलियों के रूप में चढ़ाया" (निर्गमन 24:5)। [14]यह वाक्यांश पाँच प्रकार के बलिदानों के विषय में बताता है: होमबलियाँ, अन्नबलियाँ, मेलबलियाँ, पापबलियाँ और दोष बलियाँ। अध्याय 6 और 7 इन्हीं बलियों के विषय में एक भिन्न कर्म में अतिरिक्त निर्देश देते हैं: होमबलि (6:8-13), अन्नबलि (6:14-23), पापबलि (6:24-30), दोषबलि (7:1-7), और मेलबलि (7:11-36)। ऐसा प्रतीत होता है कि पहले भाग में इस बात पर बल दिया गया है कि आराधक को बलिदान लाने में क्या करना था; दूसरे भाग में इस बात पर बल दिया गया है कि याजक ने क्या किया, और उन्हें बलिदान से क्या प्राप्त होता था। [15]स्पष्ट तौर पर, वाक्यांश संक्षिप्त तौर पर अन्य प्रकार के बलिदान के विषय में भी बात करता है: "याजकों के संस्कार का बलिदान" (7:37)। यह हो सकता है कि इस प्रकार के बलिदान के विषय में निर्देश 6:19-23 में पाए जाते हैं और उस समारोह पर लागू होते हैं जब हारुन और उसके पुत्रों का याजकों के रूप में निवासस्थान में सेवा करने के लिए संस्कार किया गया था (अध्याय 8; 9)। संभवतः, जब भी नए याजकों को नियुक्त किया जाता, तो इन नियमों का पालन करना पड़ता था। [16]मेल बलियों के सम्बन्ध में, देखें लैव्यव्यवस्था 19:5-8. [17]पाप और दोष बलियों और तीन पूर्व बलियों के बीच एक अंतर यह है कि पहले तीन से संबंधित निर्देश उन शब्दों द्वारा प्रस्तुत किए गए हैं संकेत करते हैं, "*यदि तू इस प्रकार के बलिदान चढ़ाए ...,*" जबकि पाप और दोषबलि को इन शब्दों के द्वारा परिचित किया गया है जो यह कहते हुए प्रतीत होते हैं कि, "यदि एक पाप हो जाए, तो तुम्हें ये बलिदान चढ़ाने हैं." पहली तीन प्रकार की बलियाँ स्वेच्छा बलियाँ प्रतीत होती है (जिन्हें चढ़ाने का चुनाव आराधक करता था), परन्तु अन्य दो की

आवश्यकता रही होगी। यदि कोई क्षमा प्राप्त करना चाहता तो उसे इनमें से एक बलिदान चढ़ाना पड़ता था। [18]दोषबलि के लिए आवश्यक एक पाप के एक उदाहरण के लिए, देखें लैव्यव्यवस्था 19:20-22। [19]फिर भी, प्रकाशितवाक्य 6:9 की कल्पना डेविड एल. रोपर के द्वारा लिखे गए इस विचार का संकेत करती है, "यह तथ्य कि शहीदों की आत्माएं वेदी के नीचे थीं इस कारण महत्वपूर्ण है क्योंकि उनका लहू परमेश्वर के लिए बलिदान के रूप में उंडेला गया था" (डेविड एल. रोपर, *प्रकाशितवाक्य 1-11*, ट्रुथ फ़ॉर टुडे कमेन्ट्री [सर्ची, आर्क.: रिसोर्स पब्लिकेशन्स, 2002], 259)।